।। वीतराग शासन जयवंत हो ।।

श्री पार्श्वनाथ अष्टोत्तर शतनाम विधान

माण्डला

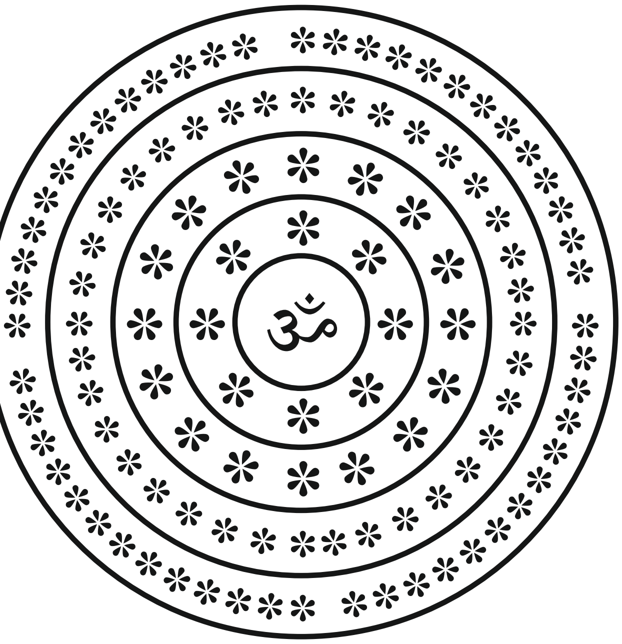

मध्य - ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 16
तृतीय वलय - 32
चतुर्थ वलय - 52
कुल अर्घ्य - 108

रचयिता : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

कृति : **श्री पार्श्वनाथ अष्टोत्तर शतनाम विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज
संस्करण : प्रथम - 2025
प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विभोरसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विलक्ष्यसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विपिनसागरजी महाराज
सहयोग : आर्यिका भक्तिभारती माता, क्षु. वात्सल्य भारती माता
सम्पादक : ब्र. आस्था दीदी, मो. : 9660996425
संयोजक : ब्र. प्रदीप भैया, मो. : 7568840873
प्राप्ति स्थल :
1. सुरेश सेठी, शांतिनगर, जयपुर, मो. : 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी (हरियाणा), प्रधान, मो. : 9416882301
3. नीरज जैन, सहादतगंज, लखनऊ, मो. : 9451251308
4. हरीश जैन, दिल्ली, मो. : 9136248971
5. राजेश जैन वैद (खाकरोड़ वाले), अंजनी नगर, इन्दौर मो. : 9826014047

✲ पुण्यार्जक परिवार ✲

श्री विपिन कुमार डोसी, श्रीमती ऊषा डोसी
अर्पित, हर्षित, श्रेणी डोसी
एशियन पेन्ट हाउस, छावनी इन्दौर (म.प्र.)
मो.: 9302102580

श्री जंबू कुमार जैन, श्रीमती राजकुमारी जैन
श्री जिनेन्द्र जैन, मयूरी जैन, ध्येय जैन, तत्त्व जैन
महिला स्मार्ट सिटी, बड़ा बांगड़दा, इन्दौर (म.प्र.)
मो.: 7987647527

कृति : **श्री पार्श्वनाथ अष्टोत्तर शतनाम विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज
संस्करण : प्रथम - 2025
प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विभोरसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विलक्ष्यसागरजी महाराज,
मुनिश्री 108 विपिनसागरजी महाराज
सहयोग : आर्यिका भक्तिभारती माता, क्षु. वात्सल्य भारती माता
सम्पादक : ब्र. आस्था दीदी, मो. : 9660996425
संयोजक : ब्र. प्रदीप भैया, मो. : 7568840873
प्राप्ति स्थल :
1. सुरेश सेठी, शांतिनगर, जयपुर, मो. : 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी (हरियाणा), प्रधान, मो. : 9416882301
3. नीरज जैन, सहादतगंज, लखनऊ, मो. : 9451251308
4. हरीश जैन, दिल्ली, मो. : 9136248971
5. राजेश जैन वैद (खाकरोड़ वाले), अंजनी नगर, इन्दौर मो. : 9826014047

✲ पुण्यार्जक परिवार ✲

जे.के.जैन, रवीन्द्र जैन,
राजेश जैन (अध्यक्ष),
श्रीमती अंगूरी जैन, अभिषेक जैन, सचिन जैन,
राकेश जैन, सुमत जैन, राजीव जैन,
चन्द्रकान्ता जैन,
महेन्द्र कुमार जैन, प्रभादेवी जैन
चन्द्रनगर, भोपाल (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

।। उपजाति–छन्द ।।

देवाधिदेवं जितभावजं तं, देवाधिपै–रान्वित–पादपद्मं।
नत्त्वा जिनेन्द्रं शिव सौख्य सिद्ध्यै, स्तोष्ये पवित्रं कलिकुण्डयंत्रम्।।1।।
पूजां प्रकुर्वन्ति नरास्तु भक्त्या, यंत्रस्य ये श्रीकलिकुण्ड नाम्नः।
तेषां नराणा–मिह सर्वविघ्ना, नश्यत्वश्यं भुक्ति तत्प्रसादात्।।2।।
चिंत्तांबुजे ये स्व गुरूपदेशात्, ध्यायंति नित्यं कलिकुण्ड यंत्रम्।
सिंहादयो दुष्टमशगास्तु लोके, पीडां न कुर्वन्ति नृणां च तेषाम्।।3।।
युक्त्या स्तुवन्तः कलिकुंड यंत्रं, सर्वोकुरु दोषाहत–दुत्तमं तम्।
मोक्षानघ श्रीवर चारु सौख्य, प्राप्तिस्तु तेषां भवतीह सत्यम्।।4।।
यंत्रस्य चिंता हृदयेस्ति यस्याः, सद्धर्मवक्त्रा व्रतशील युक्ताः।
वंध्यापि सत्पुत्रवती भवेत्सा, लोके क्रमात्स्वर्ग सुखं प्रयाति।।5।।
स्मरन्ति यंत्रस्य विधानतो ये, नरा अहिंसादि गुण प्रयुक्ताः।
ज्वर ग्रहण्यादि रुजोऽत्र तेषां, प्रयांति नाशं कलिकुण्ड यंत्रात्।।6।।
सुरासुरेशै–रपि सेव्यमानं, समस्त दोषोझिंत बीजजालम्।
यंत्रं नरा ये कलिकुण्ड–मेतत्, नित्यं भजंत्यत्र भयं न तेषाम्।।7।।
सर्पाग्नितोयादि विषादि विघ्नाः यांति क्षयं यस्य वर प्रसादात्।
तत् श्री जिनेन्द्रस्य सरोजजातं, नित्यं नमः श्री कलिकुण्ड यंत्रम्।।8।।

।। मालिनी–छन्द ।।

त्रिभुवन जनताया सारभूरीप्सितं यद्,
बुध तत नुत विद्यानन्द सुरेडितं यः।
तदिह पठति भव्यः सर्वदा स्तोत्रमेतत्,
शिवपद–मनघं सं प्राप्यते देव देवः।।9।।

।। शार्दूलविष्क्रीडित–छन्द।।

प्रोद्यत्सन्मणि नागनायकफणा–टोपोल्लसन्मंडपं।
सद्भक्त्या नमदिंद्र मौलिमणिभिर्–भास्वत्पदांभो–रुहम्।
प्रोन्मीलन्नरनीर क्षर्दिपटली शंकास–मुत्पादकं।
ध्यायेत् श्रीकलिकुण्डदंड विलसच्चंडोग्रपार्श्वप्रभुम्।।10।।

श्री जिन सेनाचार्यकृत अष्टोत्तर शत नाम स्तोत्र

श्री पार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परम–शङ्करः।
नाथः परम शक्तिश्च, शरण्यः सर्व कामदः।।1।।
सार्वो विघ्नहरः स्वामी, सर्व सिद्धि प्रदायकः।
सर्व सत्त्व हितोयोगी, श्रीकरः परमार्थदः।।2।।
देवदेवः परमसिद्धश्–चिदानन्द मयश्–शिवः।
परमात्मा परंब्रह्मा, परमः परमेश्वर ः ।।3।।
जगन्नाथः सुर ज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मेश, श्री निवासः शुभार्णवः।।4।।
सर्वज्ञः सर्वदर्शी च, सर्वगः सर्वदोत्तमः।
सर्वात्म सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः।।5।।
तत्त्वमूर्तिः परादिव्यः, परंब्रह्म –प्रकाशकः।
परमेन्दुः परत्राणः, परमामृत सिद्धिदः।।6।।
अजः सनातनः, शंभु–रीश्वरेशस्–सदाशिवः।
विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः।।7।।
अमराश्–चाऽजरोनन्त, एकोऽनेको शिवात्मकः।
अलक्षश्–चाऽप्रमेयश्च, ध्यानलक्षो निरंजनः।।8।।
साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः।
निर्मलो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः।।9।।
ओंकारा – प्रकृतिश् – व्यक्तो, व्यक्तरूप श्रीमयः।
ब्रह्मद्वयः प्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः।।10।।
दिव्य तेजोमयः शान्तः, परामृत–मयोऽच्युतः।
आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुनः।।11।।
शुद्ध स्फटिक संकाशः, स्वयंभू परमकृतिः।
व्योमाकारश्–चरमं च, लोकालोक–प्रकाशकः।।12।।
ज्ञानात्मा परमानंदः,प्राणारूढ़ मनः स्थितः।
मनः सिद्धो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः।13।।
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभु।
भगवान् सर्व सत्त्वेशः, शिव श्री सौख्य दायकः।।14।।
इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः।
दिव्य–मष्टोत्तरं नाम, शतमत्र प्रकीर्तितम्।।15।।

पवित्रं परमं ध्येयं, परमानंद दायकम्।
भुक्ति मुक्तिप्रदातारं, पठतां मंगलप्रदम्।।16।।

उपसंहार

श्रीमत् परम कल्याणं, सिद्धिदः श्रेयसेस्तुमाम्।
पार्श्वनाथो जिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः।।17।।
धरणेन्द्र फणच्चित्राऽलंकृतो यः श्रियं प्रभुः।
दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठित शासनः।।18।।
ध्यायेत् कमल मध्यस्थं, श्री पार्श्व जगदीश्वरम्।
ओम् ह्रीं श्रीं–अर्हं संयुक्तं, केवलज्ञान भास्करम् ।।19।।
पद्मावत्यान्वित वामे, धरणेन्द्रस्तु दक्षिणे।
परितोऽष्टदलस्थेन, मंत्रराजेन् संयुतम्।।20।।
अष्टपत्रस्थितैः, पंच–नमस्कारैस्–तथा त्रिभिः।
ज्ञानाद्यैर्–वेष्टितं नाथं, धर्मार्थ–काम–मोक्षदम्।।21।।
सत्षोड्श–दलारूढा–विद्या देविभि–रादृतम्।
चतुर्विंशति–पत्रस्थं, जिनमातृ–समन्वितम्।।22।।
माया वेष्टियाग्रस्थं क्रोंकार सहित प्रभुं।
नवग्रहावतं देवं, दिक् पालैर्–दशभिर्व्रतम् ।।23।।
ओम चतुकोंणेषु मंत्राद्यैः, चतुवर्गान्वितैर्–जिनम्।
चतुरष्टादशद्वीति, द्विधांकां संज्ञकैर्–युतम्।।24।।
दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च।
चतु–रस्त्रेण, विज्ञांक कृतित्वेन प्रतिष्ठितं।।25।।
श्री पार्श्वनाथ–मित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम्।
सः सर्व पाप निर्मुक्तां, भजतेऽहो! शुभां श्रियम्।।26।।
जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रणितोऽथवा।
ध्यात्वा स्तुयेच्क्षणं चाऽपि, सिद्धिस्–तेषां महोदया।।27।।
श्री पार्श्व मंत्रोराजेत्, चिंतामणिः गुणास्पदः।
शांति–पुष्टिकरो नित्य, क्षुद्रोपद्रव नाशनः।।28।।
ऋद्धि–वृद्धि–महाबुद्धि, धृति–श्री कांति–कीर्तिदः।
अणिमादि महासिद्धिं, लक्ष जापेन चाप्नुयात्।।29।।
सर्वकल्याणपूर्ण्य, जरामृत्युविवर्जितं।
अणिमादि महासिद्धिर्–लक्षजाप्येन चाप्नुयात्।।30।।

प्राणायाम मनोमन्त्र, योग–दमृत–मात्मनि।
स्वात्ममानं शिवं ध्यात्वा,स्वस्मिन् सिद्धयंति जंतवः।।31।।
हर्षदः कामदश्चैव, रिपुघ्नः शिव सौख्यदः।
पातु मां परमानंद, लक्षणः संस्तुतो जिनः ।।32।।
तत्त्वरूप–मिदं स्तोत्रं, सर्वमंगल सिद्धिदम्।
त्रिसन्ध्यं यो जपेन्नित्यं, प्राप्नोति स श्रियं सदा।।33।
ॐकारैः पूजितं माया, बीजैरासेवितं तथा।
नवग्रहैर्वृत्तं देवं, दिक्पालैर्–दशभिर्–वृतम्।।33।।

पार्श्वनाथ स्तोत्र–हिन्दी

पूर्ण मनोरथ करने वाले, देने वाले हैं सुख श्रेष्ठ।
परम शांति संयुक्त पार्श्व जिन, जग की रक्षा करें यथेष्ठ।।1।।
विश्वंभर सबके हितकारी, सर्व सिद्धि दायक जिननाथ।
श्रीकर हे परमार्थ प्रदायी!, जग हितकारी पारसनाथ।।2।।
चिदानन्दमय सिद्धि प्रदायक, परमातम देवों के देव।
परम ब्रह्म परमेश्वर अनुपम, परमातम शिवकारी एव।।3।।
जगन्नाथ देवों में अनुपम,शास्वत स्वामी हे भूतेश!।
हे लक्ष्मी सम्पन्न शुभार्णव!, पुरुषोत्तम सुर इन्द्र विशेष।।4।।
सर्व देवेश सर्वदा सम हे! सर्वदर्शि सर्वज्ञ महान।
जगदगुरु सर्वात्म सर्वदा, सर्व व्यापि श्री जिन भगवान।।5।।
परम ब्रह्म स्वरूप दिव्य पर, तत्त्वमूर्ति परमामृत सिद्ध।
परम प्राप्त परमेन्दु आप हैं, परम प्रकाशक जगत् प्रसिद्ध।।6।।
ईश्वर शम्भू आप सनातन, अज विश्वेश्वर निर्मल आत्म।
क्षेत्राधीश सदाशिव अनुपम, शुभ्र प्रभामय हे परमात्म!।।7।।
निराकार साकार निरामय, निश्चल सकल हे निर्मल रूप!।
निर्विकार हे निर्विकल्प जिन!, पाने वाले निज स्वरूप।।8।।
अरुज अजर आनन्द एक हे!, अजर! अनेक आप शिवरूप।
ध्यान लक्ष्य अप्रमेय निरंजन, हे अलक्ष्य! चेतन स्वरूप।।9।।
ओंकार प्रकृति व्यक्त हे!, व्यक्त रूप श्री मय भगवान।
ब्रह्मरूप अक्षय प्रकाशमय, निर्भय हम करते गुणगान।।10।।
परमातम मय दिव्य तेजमय, हे उद्योत! शांत श्री मान।
आद्य परम उद्योत ज्योति हे!, परमेष्ठी मेरे भगवान।।11।।

आप शुद्ध स्फटिक तुल्य हैं, स्वयंभू श्रेष्ठ आकृति स्वरूप।
व्योमाकार चरम हे जिनवर!, लोकालोक प्रकाशन रूप।।12।।
परमानन्दमयी ज्ञानातम, प्राण रुष्ट हे! मन के ध्येय।
आप अवस्थित मनः साध्य हैं, सर्वश्रेष्ठ मन के उद्देश्य।।13।।
सर्व तीर्थमय नित्य प्रभू हैं, सर्व देश मय हैं भगवान।
सर्व तत्त्वज्ञ श्री सुखदायक,शिवमय मेरा करो कल्याण।।14।।
इस प्रकार सर्वज्ञ विशद गुरु, पार्श्वनाथ मेरे आराध्य।
दिव्य आपके नाम कहे सौ, प्राप्त कराएँ जो निज साध्य।।15।।
परम ध्येय परमानन्द दायक, भुक्ति मुक्ति दायक तीर्थेश।
परं पवित्र मंगलप्रद जिनके, विशद नाम यह कहे विशेष।।16।।

उपसंहार

श्री मत् हे कल्याण कारी जिन!, सिद्धि प्रदायक पार्श्व जिनेश!।
परोपकारी श्री मान कल्याणक, करें स्तवन यहाँ विशेष।।17।।
फणालंकृत पद्मावति धरणेन्द्र, से जिनके शासन की शान।
होंय सुशोभित पार्श्व प्रभु जी, सबको दें मुक्ती का दान।।18।।
केवलज्ञान से रहे प्रकाशित, ऐसे पार्श्वनाथ भगवान।
ॐ ह्रीं अर्हं बीजाक्षर, संयुत करना प्रभु का ध्यान।।19।।
पद्मावति बाएँ हैं एवं, धरणेन्द्र सोहे दायी जान।
उत्तम अष्ट कमल पर स्थित, मंत्र राज संयुत हैं मान।।20।।
अष्ट कमल दल पर स्थित जिन, ज्ञानादिक गुण सहित प्रधान।
धर्म अर्थ शुभ काम मोक्ष पद,पार्श्व प्रभू का करना ध्यान।।21।।
षोडस दलारूढ़ जिन मातृ, समावृत्त एवं चौबीस।
पत्रों पर ओंकार सहित प्रभु, को ध्या सुख पाएँ वागीश।।22।।
माया वेष्टित क्रों कार सह, नव ग्रहाव्रत दश भी दिग्पाल।
युक्त प्रभू को ध्याने वाला, सुख पाए अनुपम प्रतिपाल।।23।।
चतुष्कोंण में चतुर्थ वर्ग सह, मंत्र युक्त चतु–रष्टादश।
अथवा द्वि संज्ञक प्रभु ध्याने, वाले सुख पाएँ सर्वेश।।24।।
सर्व दिशाओं में क्ष–कार सह, विदिशाओं में लांकित मान।
चतुरस्य विज्ञांक से जो प्रतिष्ठित, करके पार्श्वनाथ भगवान।।25।।
की आराधना करता है जो, वह पापों से होवे मुक्त।
विशद लक्ष्मी और सर्वसुख, से हो जाता है संयुक्त।।26।।

जो भक्ती पूर्वक जिनेन्द्र की, पूजा करता स्तुति वान।
इक क्षण को भी ध्याते स्तुति, कर हो उनको सिद्धि महान।।27।।
श्री पार्श्व यंत्रराज जो चिंता–मणि सम फलप्रद रहा महान।
शांति पुष्टिकर क्षुद्रोपद्रव, नाशी है जो अतिशयवान।।28।।
ऋद्धि सिद्धि महाबुद्धि कीर्ति धृति, कांतिदायक महिमावान।
मृत्युंज्जय हे शिव स्वरूप जिन!, जगदानन्द पार्श्व भगवान।।29।।
जन्म मृत्यु से रहित पार्श्व जिन, की सब कल्याणों से पूर्ण।
लक्ष जाप करके अणिमादि, होय ऋद्धियों से परिपूर्ण।।30।।
मनोमंत्र प्राणायाम–योगों से, अमृतमय आतम स्वरूप।
में निज को ध्याने वाले को, सिद्धि प्राप्त हो अतिशयवान।।31।।
हर्ष तथा इच्छित फल दायक, शत्रु संहारक सौख्य प्रदाय।
इस क्षण जिसकी स्तुति की है, हम सब की रक्षा हो जाय।।32।।
तत्त्व स्वरूप सर्व मंगलप्रद, त्रि संध्याओं में स्तोत्र।
पाठ करे जो शास्वत लक्ष्मी, का वह 'विशद' पाएगा स्रोत।।।33।।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

।। छन्द–भुजंगप्रयात।।

चिदानन्द देवं परमनन्द गेहं, परं ब्रह्मरूपं सदानन्द कूपं।।
वरं काम लीलाप्रदं सौख्य–धामं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।1।।
अवाधं अलक्षं अनन्तं सुखान्तं, जितं मोहमल्लं सुलक्षण स्वरूपं।
जगन्नाथमेकं विकल्पं विदोषं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।2।।
अहिन्द्रैः खगेन्द्रैनुतं पादपद्मं, प्रशंतैक–बुद्धया हतं मार–दर्पम्।
जगद्व्यापक ईश्वरं लोकनाथं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।3।।
भवाब्धिपतं जीविनां नावतुल्यः, विगंधं विवर्णं सदा ज्योतिरूपं।
दशानंदकदं जितानंद केतुं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।4।।
निराकार शुद्धं परं ज्ञान रूपं, सुराच्र्यं नराच्र्यं फणीन्द्रार्य भूपं।
विकायं विमायं स्वयं बुद्धमीशं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।5।।
विबंधं विसंगं कलाभं दयालं, लल्लीलया लोक लीला निकेतं।
प्रसन्नं खगेशं करं कल्पवृक्षं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।6।।
प्रभु नाम मंत्रं नरा ये स्मरंति, इहामुत्र सौख्यवरं लभन्ते।
प्रसिद्धं प्रबुद्धं परं ज्योतिरूपं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।7।।

श्री अश्वसेनात्मज कामधेन्वा,समं भूतप्रेतादि दोषापहं तं।
करे ध्यान जीवं हरे कर्म शत्रुं, भजे संकटं भंजनं पार्श्वनाथं।।8।।

।।स्रग्धरा–छन्द।।

घाति व्रात प्रघात, प्रकट निरवाधि ज्ञान दृगवीर्य सौख्यः।
कल्याणैः पंच भेदैः, प्रबल सति चतुर्त्रिशताचाति शेषै।
यश्चाष्ट प्रातिहार्यैस्–त्रिभुवन पतिता लांछिनैस्तं यजामि।
स्याद्वादामोघ वाक्यं, विदित सुसदयं पार्श्व तीर्थकराणाम्।।

।।अनुष्टुप–छन्द।।

नमः श्री पार्श्वनाथाय, त्रैलोक्याधिपतेर् गुरुः।
पापं च हरते नित्यं, पार्श्व बिम्बस्य दर्शनं।।

।।इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ शत नाम स्तोत्र पूजन

स्थापना

।।छन्द–वंशस्थ।।

श्रियः वदं सर्व विदः पदाम्बुजं, नमन्निलिम्पालि मिलिन्द मदिरं।
सन्मान सोल्लासि नखांशु केसरं, पार्श्वस्य नः स्ताद् वरदं जिनेशिनः।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! नमः अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवोषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टम् (मालनी–छन्द)

क्षीर–हीर–गौरनीर पूरवारि धारया।
मन्द–कुन्द चन्दनादि सौरभेण सारया।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दाययकम्,।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।1।।

ॐ ह्रीं शताष्टनामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं नि. स्वाहा।

अर्क–तर्क–वर्जनै–रनर्घ चन्दन द्रवैः।
कुंकुमादि मिश्रितै–रनल्प भाट् पदाश्रितैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दाययकम्,।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।2।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः चन्दनं नि. स्वाहा।

औषधेन सिन्धुफेन हारभास–मुज्ज्वलै–,
रक्षितैः, सुलक्षितै–रजोत खण्ड वर्जितैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।3।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं नि. स्वाहा।

परिजात वारिसूत कुन्दहेम केतकैः,।
मालती सुचंपकादि सार पुष्पमालया।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्,।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।4।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं नि. स्वाहा।

व्यंजनेन पायसादिभिः समं च षट्रसैः।
मोदकोदनादिभिः सुवर्ण भाजन स्थितैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।5।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः नेवैद्यं नि. स्वाहा।

रत्न सोम सर्पिषादि दीपकैः कृतोज्ज्वलैः,।
वातघात तोपकोप कंपरूप वर्जितैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।6।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं नि. स्वाहा।

सीलिकाऽसिता गुरु प्रधूपकैः शुभप्रदैः।
वानमान वर्धमान माननी मनोहरैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।7।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं नि. स्वाहा।

श्रीफलाम्र कर्कटी सुदाड़िमादिभिः फलैः।
वर्ण मिष्ट सौरभादि चक्षुरादि मोदनैः।
चिन्तितार्थ कामधेनु कल्पवृक्ष दायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यातार्थदं हि पार्श्वनायकं।।8।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं नि. स्वाहा।

जीवनाशासितागुरुद्र–वाक्षतैः प्रसूनकैः,।
शुभेश्चरु प्रदीपकैः सुधूप रूप सत्फलैः।।
सुवर्ण भाजनस्थितै–रमारमार मामिधैः।
ज्ञान भूषणायकं महामुनिन्द्र वीक्षते।।9।।

ॐ ह्रीं शताष्ट नामधारक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचकल्याण के अर्घ्य

(बंसततिलका–छन्द)

गर्भावतार समये सुर पुष्प वृष्टिः,
कौमारिका विविध भाट् पण सेव्यमानं।
मातुः प्रसूति निर्गत यत मुक्ति शूक्तिः,
त्रैलोक्यनाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।1।।

ॐ ह्रीं वैसाख कृष्ण द्वितीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जन्माभिषेक वर मंगल पूजनार्थं,
शक्रानि पाण्डुक शिला गत हर्ष पूर्वं।
क्षीरोदकं कलश अष्टसहस्र पूज्यं,
त्रैलोक्यनाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दीक्षोत्सवे सकल इन्द्र नरेन्द्र वृंदैः,।
वैराग्य मोदन कृतं लौकान्तिकानाम्।
श्री कल्पवृक्ष सम दानि जिनेन्द्र भद्रं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां तपमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवल्य ज्ञान प्रगटं जिनदेव पूजां।
तेषां लभन्ति फल वांछति भाव पूर्वं।
पद्मावती धरण यक्षति सेव्यमानम्।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व मिदं।।4।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्णै चतुर्थी दिने केवलज्ञान प्राप्तये श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

घाति अघाति वसु कर्म विनाशकारं।
कन्दर्प दर्प मद भंजन धीर वीरं।
कर्माष्टकं विशद नाश विलाशयुक्तं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(अनुष्टुप छन्द)

पार्श्वनाथ जिनं नत्वा,विशद ज्ञान भास्करः।।
पूजयामि महाभागं, तमेकान्त जिनेश्वरः।।

(उपजाति–छन्द)

श्री शारदा अर्हन् मुखारविंदं, सदा नरेन्द्रा नतमौलि पादाम्।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।1।।
शशि प्रभा सीति यशोनिवासं,समाधि साम्राज्य सुखावकाशं।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।2।।
निराकृतिराति कृतांत संगमं ,सन्मण्डली मण्डल सुन्दरांगम्।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।3।।
अनल्प कल्याण सुधाब्धि चन्द्रम्, भवावली सूदन भाव केन्द्रम्।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।4।।
कराल कल्पांत निवार–कारम्, कारुण्य पुण्याकर वीति पारं।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।5।।
क्रूरोपसर्गं परिहर्तु–मेकं, वांछा विधानं विगताय शंकं।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।6।।
निरासया निर्जित वीर मारं, जगद्धिता कृष्ण च प्रावतारं।
चिंतामणि चिंतित कामरूपं, पार्श्वप्रभु नौमि निरस्त पापं।।7।।

श्लोक

इत्थं श्री पार्श्व नाथस्य, स्तवनं कुर्यात सुधी ।
प्राप्नोति सर्व कल्याणं, स्वर्गाभ्युदय सौख्यदम्।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

नमः श्री पार्श्वनाथाय, सर्व दोष निवारकं।।
'विशद' ज्ञान युक्ताय, हत कर्माष्ट् काय च।।

स्तवन

अहिच्छत्र में पार्श्वजिन, पाए केवलज्ञान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम यशगान ।।

।।शम्भू–छन्द।।

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान!, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर।
हे परम ब्रह्म हे कर्मजयी!, हे मोक्ष प्रदाता शिवशंकर।
हम नमन करें तव चरणों में, शुभ भावों से गुणगान करें।
स्वातम रस परमानन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करें।।1।।
वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर,इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया।।2।।
वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस,हो गई बनारस शुभ नगरी।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी।
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरित वर्ण जो पाये थे।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे।।3।।
तिथि पौषवदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बोले जयकारे।
वन में जाकर प्रभु योग धरा, तन से ममत्व को त्याग किए।
निज आत्म सुधारस को पाया, निज से निज का प्रभु ध्यान किए।।4।।
जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया।
श्री चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया।
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया।
तब श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु, मोक्ष महल को वरण किया।।5।।

दोहा

पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अगम अपार।।
अतः भक्ति करते 'विशद', जिन पद बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ शताष्ट नाम पूजन

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, इस जग में गाई जाती है।
जिनके चरणों में नत होकर, यह जगती शीश झुकाती है।
श्री पार्श्वनाथ जी तीर्थंकर, हैं तीन लोक में महिमावान।
हम तीन योग से विशद हृदय में, करते हैं जिनका आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्—अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्—अत्र मम सन्निहितौ भव—भव वषट् सन्निधिकरणं

(मोतियादाम—छन्द)

भराया झारी में शुचि नीर, धार त्रय दे पाएँ भव तीर।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

घिसाया चन्दन केसर गार, चढ़ाएँ चरणों में शुभकार।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

धुलाए अक्षत शशि सम श्वेत, चढ़ाएँ शिव पद पाने हेत।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

चढ़ाते पुष्प सुगन्धीवान, काम रुज नश जाए भगवान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

बनाये ताजे यह पकवान, चढ़ा पद हो समता रसपान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यं नि. स्वाहा।

किया हमने यह दीप प्रजाल, नाश हो मोह कर्म का जाल।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अग्नि में धूप सुगन्धीवान, खेयकर कर्म नशें भगवान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

सरस फल ताजे लिए विशेष, मोक्ष फल पाँयें हे तीर्थेश!।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्तताय फलं नि. स्वाहा।

चढ़ाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, प्राप्त करने को सुपद अनर्घ्य।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम श्री जिन का गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा

तिहुँ जग में शांती करें, तीर्थंकर परमेश।
शांती धारा दे रहे पाएँ शांति विशेष।।

शान्तये शांति धारा...

दोहा

सुरभि होवे दशों दिशा, पुष्पांजलि से नाथ!।
शांति हो संसार में, झुका रहे पद माथ।।

पुष्पांजलि क्षिपेत!

पंच कल्याणक के अर्घ्य

द्वितीया वदि वैशाख तिथि को, गर्भागम पाए।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, काशी में आए।।
पूजने जिन पद हम आए।
अश्वसेन माँ वामा के सुत, पार्श्व प्रभू गाए
पूजने जिन पद हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयाँ गर्भ कल्याणक मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी एकादशि तिथि को, प्रभू जन्म पाए।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, जिन महिमा गाए।।
पूजने जिन पद हम आए।। अश्वसेन.... ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष वदी एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि को प्रभु, संयम अपनाए।
तेरह विध चारित्र धारकर, निज को प्रभु ध्याए।।
पूजने जिन पद हम आए।। अश्वसेन.... ।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण की चौथ को प्रभुजी, विशद ज्ञान पाए।
समवशरण शुभ इन्द्र स्वर्ग से, आके बनवाए।
पूजने जिन पद हम आए।। अश्वसेन.... ।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल सप्तमी को जय, कर्मों पर पाए।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध दशा पाए।
पूजने जिन पद हम आए।। अश्वसेन.... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए मोक्ष कल्याण।
जयमाला जिन पार्श्व की, गाते महिमावान।।

।। चौपाई ।।

जय पार्श्वनाथ चिद्रूपराज, भव सागर में तारण जहाज।
जय पाप विनाशी हे जिनेश!, तुम आत्म हितैषी हो विशेष ।।1।।
जय कर्म निवारक रहे देव, सुर नर करते जिन चरण सेव।
जय गुण वारिधि जिन पार्श्वनाथ, सब विघ्न विनाशक आप साथ ।।2।।
जय वामा माँ के आप लाल, तुम काट रहे हो कर्मजाल।
श्री अश्वसेन के तनुज आप, तव करता है जग नाम जाप ।।3।।
जय सद्गुण दायक रहे आप, तव दर्शन से सब कटें पाप।
तुम पाये हो केवल्य ज्ञान, जिससे रोशन है यह जहान ।।4।।

तुम कहलाए चारित्रवान, तुम तीन लोक में हो महान ।
तुम रत्नत्रय को लिया धार, यह जीवन पाया निर्विकार ।।5।।
अपनाया तुमने मोक्ष पंथ, प्रभु भक्ति रमा के बने कंत ।
तुम भव भंजक पावन जिनेश, तव वीतराग मय रहा भेष ।।6।।
हे शिव पद दायक पार्श्वनाथ!, पद भक्त झुकाए विनत माथ ।
हम भव भव पाएँ आप साथ, तुम बनो हे मेरे देव नाथ ।।7।।
तुमने कर्मों पर किया वार, सब राग द्वेष भी किए क्षार
मन इन्द्रिय जेता हे जिनेन्द्र !, तव चरण पूजते हैं शतेन्द्र ।।8।।

दोहा

अर्हत् पद पाए प्रभो !, किए कर्म का नाश।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव पद वास।।

ॐ ह्रीं अष्टोतर शत नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा की है आपकी, विनय भाव के साथ ।
'विशद' भाव से तव चरण, झुका रहे हम माथ ।।

।।इत्याशीर्वाद।।

अर्घ्यावली

दोहा

पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हम हे नाथ!।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हमको हे प्रभु! साथ।।

(सखी–छन्द)

प्रभु राग द्वेष परिहारी, 'जिनवर' गाए अविकारी।
हम 'पार्श्वप्रभू' को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं जिन नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्दाय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु 'परमशंकर' कहलाए, शुभ शांति प्रदायी गाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं परम शंकर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन तीन लोक के स्वामी, प्रभु 'नाथ' कहे शिवगामी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं नाथ नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु 'परम शक्ति' कहलाए, पारलौकिक शक्ति जगाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं परम शक्तिनाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सद्भक्त शरण शुभ पाए, अतएव 'शरण्य' कहलाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं शरण्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्व कामद' आप निराले, सब काम बनाने वाले।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकामद नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु 'सर्व विघ्नहर' गाए, विघ्नों को दूर भगाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्नहर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु केवल ज्ञान जगाए, 'स्वामी' अतएव कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वामी नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व 'सिद्धिदायक' जानो, सब सिद्धि प्रदायी मानो।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं सिद्धिदायक नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सब जीवों के हितकारी, 'सर्व सत्वहिती' अविकारी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व सत्वहिती नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुपम जो योग लगाए, 'योगी' अतएव कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं योगी नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग को प्रभु श्री प्रदायी, 'श्रीकर' कहलाए भाई।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं श्री शंकर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमार्थद' आप निराले, परमार्थ सु करने वाले।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।13।।
ॐ ह्रीं परमार्थद नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु 'देव देव' कहलाए, देवों के देव कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।14।।
ॐ ह्रीं देव देवनाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
हैं 'स्वयंसिद्ध' अविकारी, प्रभु जग में मंगलकारी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।15।।
ॐ ह्रीं स्वयंसिद्ध नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु 'चिदानन्द' मय जानो, रत चिदानन्द में मानो।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।16।।
ॐ ह्रीं चिदानन्द नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु मुक्ती पद दातारी, कहलाए 'शिव' अनगारी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।17।।
ॐ ह्रीं शिव नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'परमात्म' आप जग जेता, कर्मों के विशद विजेता।
पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।18।।
ॐ ह्रीं परमात्म नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु 'परम ब्रह्म' अविकारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।19।।
ॐ ह्रीं अविकारी नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
इस जग में 'श्रेष्ठ कहाए, अतएव 'परम' कहलाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।20।।
ॐ ह्रीं परम नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'परमेश्वर' आप निराले, जग जड़ता हरने वाले।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।21।।
ॐ ह्रीं परमेश्वर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु 'जगन्नाथ' कहलाए, इस जग के स्वामी गाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।22।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथ नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुर ज्येष्ठ' आप सद्ज्ञानी, सुरपति के भी कल्याणी।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।23।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
रक्षक जीवों के गाए, 'भूतेश' अतः कहलाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।
ॐ ह्रीं भूतेश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
पुरुषों में उत्तम गाए, 'पुरुषोत्तम' आप कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।25।।
ॐ ह्रीं पुरुषोत्तम नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सुर सेवित जग में गाए, अतएव 'सुरेन्द्र' कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते,पद सादर शीश झुकाते।।26।।
ॐ ह्रीं सुरेन्द्र नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जिन धर्म के ईश्वर गाए, 'नित्य धर्मेश' आप कहाए।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।27।।
ॐ ह्रीं नित्य धर्मेश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'लक्ष्मी' के आश्रयकारी, हैं श्री 'निवास' अविकारी।।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।28।।
ॐ ह्रीं निवास नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जग में शुभ कार्य प्रदायी, कहलाए 'शुभार्णव' भाई।
हम पार्श्वप्रभू को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।29।।
ॐ ह्रीं शुभार्णव नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

।।चौपाई।।

सर्व वस्तु के ज्ञाता गाए, प्रभू 'सर्वज्ञ' अतः कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।30।।
ॐ ह्रीं सर्वज्ञ नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सर्व चराचर ज्ञान में आए, 'सर्वदर्शि' अतएव कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।31।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शि नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सब जीवों के रक्षाकारी, 'सर्वग' अतः कहे अविकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।32।।
ॐ ह्रीं सर्वग नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सबसे उत्तम हैं जिन स्वामी, 'सर्वोत्तम' जिन अन्तर्यामी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।33।।
ॐ ह्रीं सर्वोत्तम नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'सर्वात्म सर्वदर्शी' कहलाए, ज्ञाता दृष्टा आप कहाए।।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।34।।
ॐ ह्रीं सर्वात्म सर्वदर्शीनाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'व्यापक' जग में हैं जिन स्वामी, सर्व व्यापि हैं अन्तर्यामी।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।35।।
ॐ ह्रीं सर्वव्यापि नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जग को जो सन्मार्ग दिखाए, 'जगदगुरु' अतएव कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।36।।
ॐ ह्रीं जगद्गुरु नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सप्त तत्व का ज्ञान कराए, 'तत्वमूर्ति' जिनराज कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।37।।
ॐ ह्रीं तत्वमूर्ति नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश कराए, 'परादित्य' अतएव कहाए।
दुख हर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।38।।
ॐ ह्रीं परादित्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु 'परब्रह्म' प्रकाशक गाए, जग को ज्ञान प्रकाश कराए।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।39।।
ॐ ह्रीं परब्रह्म नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
चन्द्र कांति सम जो शुभकारी, 'परमेन्दु' जिन मंगलकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।40।।
ॐ ह्रीं परमेन्दु नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
पर के रक्षक जिन कहलाए, विशद आप 'परत्राण 'कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।41।।
ॐ ह्रीं परत्राण नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'परमामृत सिद्धिद' हे स्वामी!, तीन लोक के अन्तर्यामी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।42।।
ॐ ह्रीं परमामृत सिद्धिनामधारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जन्म मरण को आप नशाए, अतः प्रभू जी 'अज' कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।43।।
ॐ ह्रीं अज नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आप 'सनातन' ऋद्धी धारी, रहे लोक में विस्मयकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।44।।
ॐ ह्रीं सनातन नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु परमात्म दशा प्रगटाए, अतः आप 'शम्भू' कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।45।।
ॐ ह्रीं शम्भू नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
तीन लोक के स्वामी गाए, ईश' नाम प्रभु जी शुभ पाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू, शिव सौख्य प्रदायी।।46।।
ॐ ह्रीं ईश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'रक्षक' आप जगत के गाए, 'ईश्वर' आप अतः कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।47।।
ॐ ह्रीं ईश्वर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
कर्म नाशकर शिव पद पाए, अतः 'सदाशिव' आप कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।48।।
ॐ ह्रीं सदाशिव नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
विश्व के 'ईश्वर' केवलज्ञानी, 'विश्वेश्वर' हे जगकल्याणी!।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।49।।
ॐ ह्रीं विश्वेश्वर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
हो प्रमोद आतम अविकारी, 'प्रमोदात्मा' हो मंगलकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।50।।
ॐ ह्रीं प्रमोदात्मा नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सब क्षेत्रों के स्वामी गाए, 'क्षेत्राधीश' आप कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।51।।
ॐ ह्रीं क्षेत्राधीश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जग का मंगल करने वाले, 'शुभप्रद' जग में कहे निराले।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।52।।
ॐ ह्रीं शुभप्रद नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मृत्युंजयी आप पद पाए, 'अमर' आप जिनराज कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।53।।
ॐ ह्रीं अमर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
वृद्धावस्था आप निवारी, 'अजर' कहाए मंगलकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।54।।
ॐ ह्रीं अजर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
अंत गुणों का कभी न आए, अतः 'अनन्त' आप कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।55।।
ॐ ह्रीं अनन्त नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभु निर्लिप्त दशा को पाए, अतः एक प्रभु जी कहलाए।।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।56।।
ॐ ह्रीं एक नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जग को प्रभु सन्मार्ग दिखाए, अतः 'अनेक' आप कहलाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।57।।
ॐ ह्रीं अनेक नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
भव का अन्त किए जग नामी, कहे 'भवान्तक' अन्तर्यामी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।58।।
ॐ ह्रीं भवान्तक नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
बाह्य लक्ष्य के प्रभु परिहारी, आप 'अलक्ष' कहे शिवकारी।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।59।।
ॐ ह्रीं अलक्ष नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
गुणानन्त को पाने वाले, 'अप्रमेय' कहलाए निराले।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।60।।
ॐ ह्रीं अप्रमेय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आत्म ध्यान का लक्ष्य बनाए,'ध्यान लक्ष्य' अतएव कहाए।
दुखहर्ता इस जग के भाई,पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।61।।
ॐ ह्रीं ध्यान लक्ष्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आप हुए कर्मांजन नाशी, हुए 'निरंजन' शिवपुर वासी।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।62।।
ॐ ह्रीं निरंजन नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुष्क संस्थान के धारी, अतः कहे जिनवर 'साकारी'।
दुखहर्ता इस जग के भाई, पार्श्व प्रभू शिव सौख्य प्रदायी।।63।।
ॐ ह्रीं साकारी नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

।।छन्द–मोतियादाम।।

नहीं आतम का है आकार, कहाए अतः आप 'निराकार'।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।
ॐ ह्रीं निराकार नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
देह कल लगा आपके साथ, 'सकल' कहलाए पारसनाथ।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।65।।
ॐ ह्रीं सकल नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
रहित कल से हैं जिन भगवान, कहाए 'निष्कल' अतः महान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।66।।
ॐ ह्रीं निष्कल नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
नहीं है जिनके गुण का अंत, कहे 'अव्यय' श्री जिन'भगवन्त'।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।67।।
ॐ ह्रीं अव्यय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
कर्ममल नाशे जिन भगवान, रहे 'निर्मल' अति महिमावान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।68।।
ॐ ह्रीं निर्मल नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आप हो 'निर्विकार' स्वरूप, आपके नहीं कोई हैं रूप।।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।69।।
ॐ ह्रीं निर्विकार नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभू जी 'निर्विकल्प' अविकार, लोक में अनुपम मंगलकार।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।70।।
ॐ ह्रीं निर्विकल्प नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'निरामय' आप कहे भगवान, रोग का नहीं है नाम निशान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।71।।
ॐ ह्रीं निरामय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभू 'ऊंकारकृति' स्वरूप, चरण झुकते जिनके सब भूप।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।72।।
ॐ ह्रीं 'ऊंकारकृति' नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमःअर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम है जिनवर का 'अव्यक्त', कभी न होते जो आशक्त।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।73।।
ॐ ह्रीं अव्यक्त नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
कहे प्रभु 'व्यक्त' रूप शुभकार, जगत जन को शिव के आधार।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।74।।
ॐ ह्रीं व्यक्त नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
प्रभू हैं त्रय पद के दातार, 'त्रयीमय' कहलाए शुभकार।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।75।।
ॐ ह्रीं त्रयीमय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आप हैं उभयब्रह्म स्वरूप, 'ब्रह्मद्वय' हैं जिनराज अनूप।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।76।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मद्वय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'प्रकाशात्मा' कहलाए आप,नाश करने वाले हैं पाप।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।77।।
ॐ ह्रीं प्रकाशात्मा नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
रहा ना जिनके भय का काम, पाए हैं 'निर्भय' प्रभु जी नाम।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।78।।
ॐ ह्रीं निर्भय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जिनों में श्रेष्ठ आपका नाम, पाए हैं 'नामाक्षर' शुभ नाम।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।79।।
ॐ ह्रीं नामाक्षर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'दिव्य तेजोमय' हैं भगवान, दिव्यता पाए आप महान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।80।।
ॐ ह्रीं दिव्यतेजोमय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
कषाएँ आप किए उपशान्त, कहाए अतः प्रभू जी 'शांत'।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।81।।
ॐ ह्रीं शान्त नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'परामृतमय' हैं महिमावान, करे यह सारा जग गुणगान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।82।।
ॐ ह्रीं परामृतमय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रकृति से च्युत न होते आप, प्रभू 'अच्युत' का करते जाप।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।83।।
ॐ ह्रीं अच्युत नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सिद्ध कर लीन्हे प्रभु जी साध्य, पाए हैं नाम अतः प्रभु 'आद्य'।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।84।।
ॐ ह्रीं आद्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
आत्मा रही अनादी शुद्ध, कहाए आप 'आनद्य' विशुद्ध।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।85।।
ॐ ह्रीं आनद्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
श्रेष्ठ हैं श्री जिनवर गुणवान, नाम पाए प्रभु जी 'परेशान'।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।86।।
ॐ ह्रीं परेशान नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'परं' पद में स्थित भगवान, कहे 'परमेष्ठी' महिमावान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।87।।
ॐ ह्रीं परमेष्ठी नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
गुणों में आप सभी से श्रेष्ठ, परः कहलाए आप यथेष्ट।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।88।।
ॐ ह्रीं परः नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'शुद्ध स्फटिक संकाश' महान, शुद्ध हैं प्रभु स्फटिक समान।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।89।।
ॐ ह्रीं शुद्ध स्फटिकसंकाश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमःअर्घ्यं नि. स्वाहा।
'स्वयंभू' हैं जिन विस्मयकार, जिन्हें ध्याते जग के नर–नार।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।90।।
ॐ ह्रीं स्वयंभू नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
श्रेष्ठ कांती पाए अभिराम, 'परम द्युति' रहा आपका नाम।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।91।।
ॐ ह्रीं परमद्युति नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
रहे नभ के जैसे अविकार, कहाए प्रभु जी व्योमाकार।।78।।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।
ॐ ह्रीं व्योमाकार नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे लोकालोकाव–भाषक देव!, ज्ञान में झलके सर्व सदैव।
जिनेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।93।।

ॐ ह्रीं लोकालोकाव भाषक नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

।।पद्धडी –छन्द।।

जिन 'ज्ञानात्मा' हैं ज्ञानवान, जो प्राप्त किए केवल्यज्ञान।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।94।।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मा नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु रहते 'परमानन्द' लीन, हैं करने वाले कर्म क्षीण।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।95।।

ॐ ह्रीं परमानन्द नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

शुभ 'प्राणारूढ़ मन' कहे देव, रत प्राण में रहते हैं सदैव।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।96।।

ॐ ह्रीं प्राणारूढ़ मन नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जिन सिद्ध' जगाए आत्मबोध,मन इन्द्रिय का करते निरोध।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।97।।

ॐ ह्रीं जिनसिद्ध नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए प्रभु जी 'मनो ध्येय' हैं आतम ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।98।।

ॐ ह्रीं मनोध्येय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हम 'मनो दृश्य' का करें जाप, कट जाएँ मेरे सर्व पाप।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।99।।

ॐ ह्रीं मनोदृश्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'परापर' प्रभु आप, हम करें आपका नाम जाप।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।100।।

ॐ ह्रीं परापर नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यंनि. स्वाहा।

प्रभु 'सर्व तीर्थमय' हैं प्रधान, सब तीर्थों में अतिशय प्रधा।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।101।।

ॐ ह्रीं सर्वतीर्थमय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'नित्य' आप शास्वत विशेष, गुण पाए आप शास्वत जिनेश।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।102।।
ॐ ह्रीं नित्य नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु 'सर्व देव मय' हैं महान, हम करें प्रभू का विशद ध्यान।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।103।।
ॐ ह्रीं सर्वदेवमय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सबके स्वामी हैं 'प्रभू' आप, तव ध्यान किए सब कटें पाप।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।104।।
ॐ ह्रीं प्रभु नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भगवान' रहे जग में प्रधान, जो प्राप्त किए हैं विशद ज्ञान।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।105।।
ॐ ह्रीं भगवान नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु सर्व 'सत्वेश' पाए सु नाम, इस जग में पावन हैं ललाम्।।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।106।।
ॐ ह्रीं सर्वसत्वेश नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शिव श्री' कहलाए श्री वान, प्रगटाए हैं प्रभु विशद ज्ञान।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।107।।
ॐ ह्रीं शिव श्री नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनवर हैं अतिशय 'सौख्यदाय', जग जन को हैं जो सुखप्रदाय।
श्री पार्श्व नाथ जिनवर महान, हम करें आपका श्रेष्ठ ध्यान।।108।।
ॐ ह्रीं सौख्यदाय नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

।।छन्द–ज्ञानोदय।।

पार्श्व प्रभू उपसर्ग विजेता, तीन लोक में हुए महान।
आतम ध्यान जगाए प्रभु जी, प्रगटाए तव केवलज्ञान।।
श्री 'जिन सेनाचार्य' रचित है अष्टोत्तर शत् नाम स्तोत्र।
अर्घ्य चढ़ाते जिन नामों के, जो हैं विशद धर्म के स्रोत।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तर शत नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

जाप – ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर शतनाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा

तीर्थंकर श्री पार्श्व प्रभु, पाए पंचकल्याण।।
जयमाला गाते यहाँ, जिनकी महति महान।।

(शम्भू–छन्द)

रत्नत्रय को धारण करके, निज आतम को प्रभु ध्यायें।
उपसर्गों पर विजय प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग को अपनाएँ।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर वामा, माँ के गर्भ में प्रभु आए।
माँ ने सोलह सपने देखे, पिता स्वप्न फल बतलाए।।1।।
दोज वदी वैसाख बनारस, अश्वसेन गृह प्रगटाए।
पौष वदी ग्यारस को जन्मे, घर–घर में मंगल छाए।।
ऐरावत ले इन्द्र स्वर्ग से, न्हवन कराने को आए।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराकर, जय–2 मंगल गाए।।2।।
गये सैर करने को स्वामी, एक बार जंगल की ओर।
पार्श्व कुँवर ने देखा तपसी, पंचाग्नी तप तपता घोर।।
नाग युगल अग्नी में जलते, देख प्रभू जी हुए उदास।
मंत्र सुनाए णमोकार तब, देव सुगति में पाए वास।।3।।
पौष वदी ग्यारस को पावन, दीक्षा धारे पार्श्व कुमार।
केश लुंचकर हुए दिगम्बर, बने पार्श्व प्रभु जी अनगार।।
किया घोर उपसर्ग कमठ ने, हुए प्रभु जी ध्यानालीन।
हार मान कर चरणों में तब, कमठ झुका होकर के दीन।।4।।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रकट किए तब केवलज्ञान।
चैत कृभण की चौथ को पावन, समवशरण तब रचा महान।।
गिरि सम्मेद शिखर पे जाके, योग निरोध किए भगवान।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु, पद पाए पावन निर्वाण।।5।।

दोहा

गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान–शुभ, पाए मोक्ष कल्याण।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट से, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तर शत नाम धारकाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा

पार्श्वनाथ भगवान, अष्टोत्तर शत नाम धर।।
करते हम गुणगान, श्री जिन नामों का विशद।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज–हम सब उतारे तेरी आरती---

आज करें हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारीं-2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभु हैं, जग जन के संकटहारी ।
हो जिनवर, हम सब उतारैं तेरी आरती ।।टेक।।
हो जिनवर.....।।टेक।।

अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2,को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर.....।।1।।

गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए ।।
हो जिनवर.....।।2।।

जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
शत् इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर.....।।3।।

यह संसार असार जानकर- उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर.....।।4।।

शाश्वत तीर्थ की स्वर्णभद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए।।
हो जिनवर.....।।5।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा

पार्श्वनाथ भगवान हैं, मंगलमयी महान ।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं यशगान ।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर ।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर ।।

चौपाई

जयजय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पञ्चाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आये, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावति तव आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।

पद्मावति ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवमुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नरनारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बारबार जिन दर्शन पाएँ।।36।।
पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशय कारी पुण्य कमाते।।39।।
उभय लोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।39।।
उभय लोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।40।।

दोहा

पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार॥
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुखशांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग॥
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

जाप

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।